ज्ञानविविधा
रचना, आलोचना और शोध की त्रैमासिक पत्रिका

Online ISSN : 3048-4537
July-September 2024 : 1(4)78-79
©2024 Gyanvividha
www.gyanvividha.com

कमलेश श्रीवास्तव

दोहे

जंगल की चौपाल है, सभी पेड़ हैं पंच।
सब ने मिल कर चुन लिया, बरगद को सरपंच।

निर्मल झरने दूधिया, हरी मुलायम दूब।
ठंडी ठंडी पचमढ़ी, लुभा रही है खूब।

गरमी की अब देखिए, सुस्त हुई है चाल।
संग हवा के बदलियां, लहराती हैं बाल।

बादल छत पर झूमते, आंगन बरसे मेह।
तप तप कर गीला हुआ, धरती का इस्नेह।

आंगन में डबरे भरे, बूंदें खेलें खेल।
धार बहे दीवार पर, लगे नीर की बेल।

घर सोए छत ओढ़ कर, भीग रहा आकाश।
गलियारों पर कस रहे, बिजली के भुजपाश।

अब के सावन मदभरा, मंद मंद मुस्काय।
भजियों के संग झूमती, मदिर शाम की चाय।

(दोहा संग्रह "कुछ दोहे कमलेश के" के प्रथम खंड- इंद्रधनुष से)

Corresponding Author :
कमलेश श्रीवास्तव

मर्ज़ी है भगवान की, मेरा तेरा मेल।
वरना इस संसार में, भांत भांत के खेल।

मन के भीतर जब कभी, बजते मीठे साज़।
आंखों के ज़रिए तभी, आती है आवाज़।

आंखों में आसावरी, होठों पर शहतूत।
बदन तुम्हारा चांदनी, मन में प्रेम अकूत।

हम बैरागी हो गए, अब मत डोरे डाल।
खारा पानी मन हुआ, नहीं गलेगी दाल।

मुखड़ा उस मासूम का, जैसे खिला गुलाब।
लहज़ा उसका रेशमी, बजता हुआ रबाब।

रजनीगंधा सी हँसी, मुखड़ा है रजनीश।
बदन लरज़ती शाख़ है, कुदरत का आशीष।

रखो जला कर राह में, तुम यादों के दीप।
शायद कोई लौट कर, आए पुना समीप।

(दोहा संग्रह "कुछ दोहे कमलेश के" के द्वितीय खण्ड प्रेमालय से)

तन पत्थर का गांव है, मन उड़ता सुर्खाब।
भीतर है जो आत्मा, इक प्राचीन किताब।।

एक रोग है वासना, एक रोग संसार।
अस्पताल मन प्राण में, आध्यात्म उपचार।।

कैसी है माया प्रभू , कैसा है यह जाल।
बदन गठरिया पाप की, प्राणों में सुकताल।।

उम्मीदें सब मिट गईं, मिटता गया जुनून।
ख़ुद के भीतर जब गया, गहरा हुआ सुकून।।

जानोगे तुम एक दिन, कितना तिल में तेल।
इतनी चिंता काह की, जीवन है इक खेल।।

ना काहू की हार है, ना काहू की जीत।
मधुर स्वरों में गाइए, जीवन एक सुगीत।।

जब भी मन बेचैन हो , जब भी रहें उदास।
अपने अंदर ढूंढिए , कहां कौन सी प्यास।।

(दोहा संग्रह "कुछ दोहे कमलेश के" के चतुर्थ खंड आत्मबोध से)

•